शायद सांप ने डायनासौर को खाया था

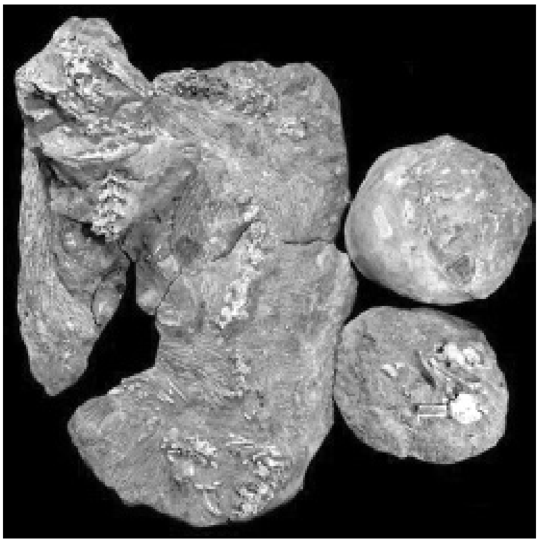

अहमदाबाद से करीब 130 कि.मी. दूर स्थित ढोली डंगरी गांव में 6.7 करोड़ साल पहले के सांप का जीवाश्म प्राप्त हुआ है। इस प्राचीन सांप के जीवाश्म में खानपान की कुछ अलग आदतें पाई गई हैं। इसको देखकर ऐसा लगता है कि इसने एक युवा डायनासौर को अपना भोजन बनाया था।

जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, नागपुर के जीवाश्म विज्ञान विभाग में डायरेक्टर धनंजय एम. मोहाबे ने सन 1984 में करीब एक पूरे सांप का जीवाश्म खोजा। यह जीवाश्म एक सॉरोपोड डायनासौर के घोंसले में था।

यह सांप अण्डे से निकलते एक नवजात डायनासौर के आसपास कुंडली में लिपटा मिला है। और इसी स्थल पर सांपों के अन्य जीवाश्म भी डायनासौर अण्डों को दबोचते मिले हैं। इसको देखकर ऐसा लगता है कि ये सांप डायनासौर को खाते होंगे।

सन 1987 में मोहाबे ने अण्डे के कवच और डायनासौर के अंगों की हड्डियों को पहचान लिया था लेकिन पूरे नमूने की व्याख्या करने में असमर्थ रहे थे। फिर सन 2001 में जब मिशिगन विश्वविद्यालय के जेफरी विलसन मोहाबे से मिलने गए तब उन्होंने यह नमूना देखा और आश्चर्यचकित रह गए। विलसन का कहना था कि यह अलग तरह का नमूना है और इस पर आगे काम करने की आवश्यकता है।

इस नमूने पर युनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन म्यूज़ियम में गहन अध्ययन हुआ। इस टीम में सर्प विशेषज्ञ जेसन हैड भी शामिल रहे।

इस अध्ययन से यह बात सामने आ रही है कि जब यह नवजात डायनासौर अण्डे से बाहर आ रहा था तब ही इसे सांप ने अपना शिकार बना लिया होगा। यह अण्डा ड्रेनेज के पास रेत में मिला था और तलछट से ढंका था। यह सांप 3.5 मीटर लंबा है जिसका नाम सनाजे है। यह आजकल के सांपों से कुछ अलग होता था।

इस खोज से एक बात की और पुष्टि होती है। सनाजे सर्प के निकट रिश्तेदार ऑस्ट्रेलिया में ही पाए गए हैं। इससे लगता है कि भारतीय उपमहाद्वीप का जुड़ाव दक्षिणी महाद्वीपों अर्थात गोंडवाना भूखंड से रहा था और अब तक जितना सोचा जाता था उससे भी अधिक समय तक रहा था। *(स्रोत फीचर्स)*

वर्ग पहेली 67 का हल

जै	व	वि	वि	ध	ता	▨	अ	क्ष
▨	ल	▨	टा	▨	त्का	▨	क्रि	▨
ब	या	▨	मि	▨	लि	थि	य	म
▨	का	▨	न	म	क	▨	▨	ह
श	र	द	▨	शा	▨	म	श	क
ह	▨	▨	ग	ल	त	▨	क	▨
द	ल	द	ल	▨	र	▨	र	फू
▨	की	▨	नां	▨	क	▨	कं	▨
बे	र	▨	क	ल	श	पा	द	प